



ISSN 0973-2616

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह बुलेटिन

वर्ष 10 अंक 5

www.csir.res.in

मई 2022

नये बायो-इन्क्यूबेशन केंद्र से जम्मू-कश्मीर में स्टार्टअप कल्चर बढ़ने की उम्मीद



वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) की जम्मू स्थित प्रयोगशाला-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन (सीएसआईआर-आईआईआईएम) में

बायोनेस्ट (BioNEST) इन्क्यूबेशन सेंटर शुरू हो गया है। केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान, राज्य मंत्री, पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत,

पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा बायोनेस्ट की शुरुआत की गई है।

बायोनेस्ट के आरंभ से जम्मू-कश्मीर में सुगंधित एवं औषधीय पौधों पर

आधारित स्टार्टअप्स को बढ़ावा मिलने की उम्मीद बढ़ गई है। भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) द्वारा जम्मू-कश्मीर में जैव प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहन देने और स्थानीय युवाओं में उद्यमीय दृष्टिकोण एवं कौशल विकसित करने के उद्देश्य से बायोनेस्ट इन्क्यूबेशन सेंटर को डिजाइन किया गया है।

हिमालय के जैव विविधता समृद्ध क्षेत्र में बसे जम्मू-कश्मीर में सुगंधित तेल उत्पादों, औषधीय मशरूम, न्यूट्रास्यूटिकल उत्पादों, हर्बल दवाओं और वेलनेस उद्योग में अपार संभावनाएं हैं। यह स्थिति बायोटेकस्टार्ट-अप के लिए एक बेहतर उद्यमशीलता क्षमता प्रदान करती है। प्रतिभाशाली युवाओं और प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद इस क्षेत्र में उद्यमिता का अभाव रहा है। बायोनेस्ट की स्थापना इस खाई को पाटने में कारगर हो सकती है।

बायोनेस्ट इन्क्यूबेशन केंद्र का उद्देश्य उद्यमीय विचारों को प्रोत्साहित करना, और इस क्षेत्र के युवाओं के बीच स्टार्टअप संस्कृति का पोषण करना है। यह इन्क्यूबेशन केंद्र स्टार्टअप्स को उत्पाद विकास चक्र के

दौरान समग्र समर्थन, सलाह और पोषण के जरिये मुख्य धारा में शामिल होने में मदद करने में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। औषधीय एवं सुगंधित पौधों पर आधारित स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देने में नया इन्क्यूबेशन केंद्र विशेष भूमिका निभा सकता है।

केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि स्टार्टअप कॉन्सेप्ट आखिरकार जम्मू में भी रफ्तार पकड़ रहा है। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा पहले ही 64 स्टार्टअप पंजीकृत किए जा चुके हैं, और कई अन्य स्टार्टअप्स बायोनेस्ट द्वारा प्रदान किये जा रहे आजीविका से जुड़े समर्थन एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाने के लिए लगातार संपर्क में हैं।

केंद्रीय मंत्री ने बायोनेस्ट के उद्घाटन के अवसर पर बताया कि सीएसआईआर-आईआईआईएम में पंजीकृत स्टार्टअप्स द्वारा 14 उत्पाद विकसित किए जा चुके हैं, जिनमें से चार उत्पाद बाजार में पहुँच चुके हैं। डॉ सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय महत्व के संस्थान सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा अरोमा मिशन की शुरुआत की गई है, जिससे युवाओं और किसानों के लिए रोजगार

एवं आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त हुआ है। जम्मू में लैवेंडर की खेती से हुई 'बैंगनी क्रांति' का उदाहरण देते हुए कहा कि इस क्षेत्र में लैवेंडर की खेती परिवर्तनकारी साबित हुई है।

डॉ सिंह ने बताया कि मुंबई स्थित अजमल बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, अदिति इंटरनेशनल और नवनेत्री गमिका जैसी प्रमुख कंपनियां सुगंधित तेल खरीद रही हैं, जिससे सुगंधित पौधों की खेती कर रहे किसानों एवं युवाओं को अपना उत्पाद बेचने के लिए बाजार तलाशने जैसी व्यावसायिक चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सीएसआईआर-आईआईआईएम, जहाँ यह इन्क्यूबेशन केंद्र स्थापित किया गया है, को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए उच्च मूल्य के उत्पादों की खोज और विकास के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे एवं वैज्ञानिक सहायता प्रदान करने के लिए जाना जाता है। वर्ष 1942 में ड्रग लेबोरेटरी (अब सीएसआईआर-आईआईआईएम) के रूप में अपनी स्थापना के बाद से यह राष्ट्रीय प्रयोगशाला जम्मू-कश्मीर में मजबूत अनुसंधान तथा विकास आधार विकसित करके राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस समारोह में आकर्षण का केंद्र बनी ग्रामीण प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी

गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण आत्मनिर्भरता एवं आजीविका बढ़ावा देने में मददगार प्रौद्योगिकी एवं नवाचारों पर केंद्रित जम्मू के सांबा जिले के पल्ली में आयोजित तीन दिवसीय प्रदर्शनी मंगलवार को सम्पन्न हो गई। इस प्रदर्शनी में ग्रामीण आजीविका एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने से जुड़े वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के तकनीकी नवाचारों ने लोगों को सबसे अधिक आकर्षित किया। इनमें जम्मू की 'बैंगनी क्रांति' का पर्याय बनी लैवेंडर की खेती, सीएसआईआर

फ्लोरीकल्चर मिशन, सीएसआईआर-अरोमा मिशन, हींग, केसर, दालचीनी जैसे बहुमूल्य उत्पादों की खेती से जुड़ी प्रौद्योगिकी, एकीकृत कीट प्रबंधन, बाँस अपशिष्ट से चारकोल बनाने की तकनीक, और कृषि उत्पादों को बेचने में मददगार किसान सभा ऐप प्रमुखता से शामिल हैं।

इस प्रदर्शनी में एक तरफ 'अरोमा मिशन' के अंतर्गत सीएसआईआर-सीमैप द्वारा 'बैंगनी क्रांति' को प्रदर्शित किया गया, तो फ्लोरीकल्चर मिशन से जुड़े आयाम

सीएसआईआर-एनबीआरआई के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदर्शित किये गए। इसी तरह, हींग, केसर, दालचीनी जैसे उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों के उत्पादन एवं विपणन के बारे में जानकारी सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा प्रदान की गई। सीएसआईआर-आईआईसीटी द्वारा प्रदर्शित सेमिओकेमिकल्स/फेरोमोन अनुप्रयोग प्रौद्योगिकी और सीएसआईआर-सीएमआईआरआई द्वारा विकसित ई-टैक्टर ने भी लोगों को खूब लुभाया। जम्मू और कश्मीर के लिए चमड़ा क्षेत्र



सीएसआईआर-सीएमईआरआई द्वारा विकसित ई-ट्रैक्टर



सीएसआईआर-एनएएल द्वारा विकसित ड्रोन

में कौशल एवं उद्यमिता विकास से संबंधित सीएसआईआर-सीएलआरआई के प्रयासों को भी यहाँ प्रदर्शित किया गया था।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के अवसर पर यह इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी 24-26 अप्रैल तक आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए स्कूली बच्चों एवं कॉलेज छात्रों के साथ-साथ बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, उद्यमी, और ग्रामीण विकास से जुड़ी सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि पहुँच रहे थे। प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के दौरान देश भर में फैली सीएसआईआर की घटक प्रयोगशालाओं द्वारा पोस्टर, शॉर्ट फिल्म, प्रोडक्ट डिस्प्ले, और सफल लाभार्थी उद्यमियों की उपस्थिति के माध्यम से ग्रामीण प्रौद्योगिकियों एवं उनकी उपयोगिता को प्रदर्शित किया गया।

केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान, राज्य मंत्री पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि इस प्रदर्शनी में गरीबी उन्मूलन, आजीविका वृद्धि, स्वस्थ गाँव, बच्चों के अनुकूल गाँव, जल सुलभ गाँव, स्वच्छ एवं हरा-भरा गाँव, गाँव में आत्मनिर्भर बुनियादी ढाँचा जैसे विषय शामिल किये गए हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास और पंचायती राज के विषयों के साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एकीकरण को प्रदर्शित करने वाले स्टाल इस प्रदर्शनी में प्रमुखता से लगाए गए हैं।

सीएसआईआर-एनएएल द्वारा विकसित मीडियम मल्टी-कॉप्टर मानव रहित एयर व्हीकल (एमयूएवी), जो कृषि क्षेत्र के अनुप्रयोगों में उपयोग हो सकता है, को भी लोगों ने उत्सुकतापूर्वक देखा। ग्रामीण स्तर पर उद्यमिता को बढ़ावा देने से जुड़ी विभिन्न प्रौद्योगिकियों को इस प्रदर्शनी में पेश किया गया। अपशिष्ट फूलों से अगरबत्ती निर्माण, कृषि अपशिष्ट से बनी कटलरी, सूखे फूलों से बने शिल्प के बारे में विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जा रही जानकारी में लोग रुचि लेते देखे गए।

जल की उपलब्धता का पता लगाने के लिए हेलीकॉप्टर की मदद से हाई रिजोल्यूशन जलभृत मैपिंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित

वाटर सर्विस डिलीवरी मेजरमेंट ऐंड मॉनिटरिंग सेंसिंग सिस्टम, अपशिष्ट जल उपचार, जल प्रबंधन, जलस्रोतों के पुनरुद्धार, और पर्वतीय क्षेत्रों में सापेक्ष आर्द्रता से वायुमंडल से जल प्राप्त करने से जुड़ी तकनीकों को प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया गया, जो जल प्रबंधन के क्षेत्र में प्रभावी बदलाव लाने में सक्षम हैं।

स्वच्छ एवं हरित गाँव के सपने को साकार करने से संबंधित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियाँ भी इस प्रदर्शनी में देखने को मिली हैं।

ठोस कचरा प्रबंधन, सूक्ष्मजीवों की मदद से मल को खाद में परिवर्तित करने में सक्षम शुष्क टॉयलेट, प्लास्टिक कचरे का उपयोग, सोलर पावर ट्री जैसे नवीकरणीय ऊर्जा से जुड़ी तकनीक, और सोलर चूल्हा जैसी ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को भी खूब पसंद किया गया।

सीएसआईआर को पर्यावरण, स्वास्थ्य, पेयजल, भोजन, आवास, ऊर्जा, कृषि और गैर-कृषि क्षेत्र सहित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधारित अनुसंधान एवं विकास कार्यों के

लिए जाना जाता है। सीएसआईआर के पास 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, 39 आउटरीच केंद्रों, 03 नवाचार परिसरों और अखिल भारतीय उपस्थिति वाली पाँच इकाइयों का एक गतिशील नेटवर्क है। सीएसआईआर समुद्र विज्ञान, भूभौतिकी, रसायन, दवाओं, जीनोमिक्स, जैव प्रौद्योगिकी और नैनो प्रौद्योगिकी से लेकर खनन, वैमानिकी, इंस्ट्रुमेंटेशन, पर्यावरण इंजीनियरिंग और सूचना प्रौद्योगिकी तक एक व्यापक स्पेक्ट्रम को कवर करता है।

सीएसआईआर-निस्पर की उत्प्रेरणा से विज्ञान संचार पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन



राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए भारत के तत्कालीन प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. के. विजयराघवन

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सीएसआईआर) के नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) द्वारा 10 मार्च 2022 को

विज्ञान संचार के मुद्दे पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (एनपीएल), नई दिल्ली के सभागार में किया गया

जिसका केंद्रीय विषय था “विज्ञान संचार को संवारें और विज्ञान संचार को निखारें”।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि और भारत सरकार के तत्कालीन प्रधान वैज्ञानिक

सलाहकार प्रो. के. विजयराघवन ने इस मौके पर कहा कि जब समाज में तर्कहीन और अवैज्ञानिक सूचना व्याप्त हो तो वहां विज्ञान संचार की जरूरत बढ़ जाती है। उद्घाटन सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. शेखर चिंतामणि मांडे ने कहा कि हमें ऐसे कुशल लोगों की जरूरत है जो वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में हो रहे अनुसंधान की जानकारी सरल भाषा में आमजन को पहुंचाएं।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने निस्पर संस्थान के व्यापक उद्देश्यों और प्रतिबद्धताओं के बारे में विस्तार से चर्चा किया। उन्होंने कहा कि आज शोध पत्रों की बजाय लोकप्रिय विज्ञान लेखों की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि और टीसीएस रिसर्च में मुख्य वैज्ञानिक डॉ. शर्मिला मांडे ने कहा कि विज्ञान की उपलब्धियां मानव जीवन में परिवर्तन लाने

का काम करती हैं। अभिभावकों और शिक्षकों को बच्चों के भीतर विज्ञान के प्रति इस रोमांच और आकर्षण को विज्ञान के अध्ययन की ओर मोड़ने में इस्तेमाल करना चाहिए। संगोष्ठी में सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. वेणुगोपाल अचंता और सीएसआईआर-प्रगत पदार्थ तथा प्रक्रम अनुसंधान संस्थान (एम्पी), भोपाल के निदेशक प्रो. अवनीश कुमार श्रीवास्तव ने भी अपने विचार रखे।

इस संगोष्ठी में सीएसआईआर-निस्पर और दूसरे वैज्ञानिक संस्थानों के कई प्रकाशनों का लोकार्पण भी किया गया। संगोष्ठी का पहला तकनीकी सत्र 'विज्ञान आउटरीच को प्रोत्साहन एवं संचार' विषय पर केंद्रित था। विज्ञान एवं इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड, डीएसटी, भारत सरकार के वैज्ञानिक-जी, डॉ. राजीव महाजन ने इस सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. ज्योत्सना धवन, डॉ. सी.एम. नौटियाल,

डॉ. अनुराग कुमार, डॉ. संतोष शुक्ला, श्री निमिष कपूर और डॉ. रोहिणी गर्ग इस सत्र के प्रतिभागी वक्ता रहे। दूसरा तकनीकी सत्र विज्ञान संचार के उल्लेखनीय पहल पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी.एम. नौटियाल ने की। डॉ. रश्मि शर्मा, डॉ. अरविन्द सी. रानाडे, श्री कपिल त्रिपाठी, श्री तरुण कुमार जैन, श्री जुबैर सिद्दीकी और श्रीमती सोनाली नागर इस सत्र के प्रतिभागी वक्ता थे। संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. नकुल पाराशर ने की। श्री हसन जावेद खान, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का सारांश प्रस्तुत किया। डॉ. गीता वाणी रायसम, प्रमुख, सीएसआईआर-एचआरडीजी और डॉ. रश्मि शर्मा, वैज्ञानिक, डीएसटी इस सत्र की सम्मानित अतिथि रहीं। सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा आयोजित कार्यशाला महिला वैज्ञानिकों-प्रशासकों ने अपने कार्य और जीवन के बीच संतुलन से जुड़े अनुभव साझा किए



कार्यशाला में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ. शर्मिला मांडे (बाएं से चौथे स्थान पर) और साथ में सीएसआईआर की महिला वैज्ञानिक एवं प्रशासक

सीएसआईआर—राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) ने सीएसआईआर—एनपीएल, नई दिल्ली में 10 मार्च 2022 को महिला वैज्ञानिक-प्रशासक कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के दौरान, टीसीएस अनुसंधान की मुख्य वैज्ञानिक डॉ. शर्मिला मांडे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। डॉ. मांडे द्वारा सीएसआईआर—निस्पर के एक महत्वपूर्ण दस्तावेज (ए सीएसआईआर सर्वे टूअर्द्ध्स जेंडर पैरिटी: वीमेन इन स्टेम, लेखकगण: डॉ. रंजना अग्रवाल, डॉ. संध्या वाकडिकर एवं डॉ. प्रवीन शर्मा) का विमोचन किया गया।

दस्तावेज के विमोचन के बाद जारी कार्यशाला का विषय था “सीएसआईआर में महिला वैज्ञानिक एवं प्रशासक: कार्य—जीवन के बीच संतुलन से जुड़े अनुभव”। इस कार्यशाला में सीएसआईआर के विभिन्न

वैज्ञानिक अनुभागों का नेतृत्व कर रही महिला वैज्ञानिकों—प्रशासकों ने अपने कार्यालय और व्यक्तिगत जीवन से संबंधित अनुभव साझा किए। इस कार्यशाला में निस्पर और एनपीएल की तकरीबन 50 महिला वैज्ञानिकों, प्रशासकों, स्टाफ कर्मियों और विद्यार्थियों ने भागीदारी की।

सीएसआईआर—निस्पर की पहल से आयोजित इस कार्यशाला का आरम्भ डॉ. संध्या वाकडिकर, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर—निस्पर द्वारा स्वागत संबोधन के साथ किया गया। इसके बाद सीएसआईआर—निस्पर की निदेशक डॉ. रंजना अग्रवाल ने विमोचित दस्तावेज सहित कार्यशाला की पृष्ठभूमि के बारे में चर्चा की।

इस कार्यशाला की मुख्य अतिथि डॉ. शर्मिला मांडे ने महिलाओं के प्रोफेशनल कार्य और जीवन के बीच तालमेल बैठाने

से संबंधित अपने अनुभव प्रतिभागियों के साथ साझा किया। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर की जिन महिला वैज्ञानिकों और प्रशासकों ने अपने विचार व्यक्त किए, उनके नाम हैं: डॉ. सुमन कुमारी मिश्रा, निदेशक, सीएसआईआर—सीजीसीआरआई; डॉ. गीता वाणी रायसम, प्रमुख, सीएसआईआर—एचआरडीजी; डॉ. विभा मल्होत्रा, प्रमुख, आईपीयू एवं टीएमडी, सीएसआईआर; डॉ. पूर्णिमा रूपल, प्रमुख, डीजीईडी एवं एससीडीडी, सीएसआईआर; डॉ. वी.जे. सतिगिरी, प्रमुख, टीकेडीएल, सीएसआईआर; डॉ. रमा स्वामी बंसल, प्रमुख, आईएसटीएडी, सीएसआईआर। कार्यशाला में आमंत्रित वक्ताओं के संबोधन के बाद वक्ताओं और प्रतिभागियों के बीच परस्पर संवाद—सत्र का आयोजन भी किया गया जिसमें महत्वपूर्ण अनुभव साझा हुए।



कार्यशाला में मौजूद अतिथियों और प्रतिभागियों का समूह चित्र

सीएसआईआर-सीडीआरआई तथा अविटाबायोमिक्स ने एक विशेष बोन हेल्थ ड्रग्स के विकास एवं वाणिज्यीकरण के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये

सीएसआईआर—केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई), लखनऊ, औषधि अनुसंधान का एक विशिष्ट संस्थान तथा अविटाबायोमिक्स, यूएसए, अपने विकासवादी जीवविज्ञान प्लेटफॉर्म पर आधारित अगली पीढ़ी की वानस्पतिक औषधि को विकसित करने वाले एक नेतृत्वकर्ता के बीच समझौता ज्ञापन किया गया। इसके अंतर्गत सीडीआरआई की पेटेंट की गई कैवियुनिन (Caviunin) आधारित औषधि संघटन प्रौद्योगिकी के पुनः नैदानिक विकास एवं वाणिज्यीकरण के लिए अविटाबायोमिक्स को लाइसेंस प्रदान किया गया।

वैश्विक स्तर पर 50 वर्ष से ऊपर की आयु वर्ग में तीन महिलाओं में एक तथा पाँच पुरुषों में एक ओस्टियोपोरोटिक फ्रैक्चर से ग्रसित हैं। अकेले यूएस में, 50 वर्ष के ऊपर की आयु वर्ग में लगभग 10 मिलियन लोग ओस्टियोपोरोसिस से ग्रसित हैं तथा यूनाइटेड स्टेट्स में दो महिलाओं में से एक अपने जीवन-काल में फ्रैजिलिटी फ्रैक्चर का शिकार होंगी। यूएस में लगभग 43 मिलियन से अधिक लोगों में अस्थि अल्पता (low bone mass) है, जिनमें ओस्टियोपोरोसिस का खतरा अधिक है। विश्वस्तर पर वर्ष 2019 में कुल 178 मिलियन नए फ्रैक्चर तथा 455 मिलियन फ्रैक्चर से जुड़े

पूर्वव्यापी मामले थे। इंडियन सोसायटी फॉर बोन एंड मिनरल रिसर्च (आईएसबीएमआर), भारत के अनुसार 50 मिलियन भारतीय महिलाएं ओस्टियोपोरोसिस से ग्रसित हैं।

ओस्टियोपोरोसिस एक दीर्घकालिक स्थिति है जिसमें जीवन-पर्यंत उपचार की आवश्यकता पड़ती है। वर्तमान में उपलब्ध औषधियों की स्वीकृत उपचार अवधि 01 से 05 वर्ष (औषधि के आधार पर) होती है, यह घटती प्रभावकारिता एवं विपरीत परिघटनाओं के बढ़ते जोखिम के कारण होती है। कैवियुनिन (Caviunin) आधारित चिकित्सा प्रणाली में ओस्टियोपोरोसिस के लिए मानक इलाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने का सामर्थ्य विद्यमान है। डॉ. पराग जी. मेहता, सीडीआई, अविटाबायोमिक्स ने कहा कि महत्वपूर्ण लाभ—जोखिम प्रणाली अपेक्षित प्रभावकारिता तथा दीर्घकालिक प्रयोग के साथ अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने कहा कि हम इन औषधियों को मरीजों तक पहुंचाने के लिए अत्यंत उत्सुक हैं और इस बात की प्रसन्नता है कि हमें सीडीआईआई टीम के विशेष वैज्ञानिक अनुभवों का भरपूर लाभ मिलेगा।

डॉ. ऋतु त्रिवेदी, एंडोक्राइनोलॉजी प्रभाग, सीडीआईआई के समूह ने यह प्रदर्शित किया कि किस प्रकार कैवियुनिन स्कैफोल्ड का एक लक्षित कार्य है जो हड्डियों के विखंडन को रोकता है, नए हड्डी के निर्माण को

उत्प्रेरित करता है तथा और बोन टर्नओवर मार्कर्स को कम करता है। सीडीआईआई में एक दशक अवधि का यह शोध इस विशिष्ट औषधि के विकास की जानकारी प्रदान करता है जो होस्ट माइक्रोबायोम को व्यवस्थित कर सकता है। यह लाइसेंस हमारे नवाचारी विज्ञान की क्षमता का साक्ष्य है और हमारे विश्वस्तरीय वैज्ञानिकों की सशक्त शोध उत्पादकता के मूल्य को भी दर्शाता है। प्रो. तपस कुमार कुंडु, निदेशक, सीडीआईआई ने कहा कि हमने अविटाबायोमिक्स के साथ सहयोग स्थापित किया है जिन्हें यूएस एफडीए से अनेक कैंसर संकेतों के लिए चार क्लीनिकल आईएनडी (INDs) उनकी वानस्पतिक औषधि को प्राप्त करने का ट्रैक रिकॉर्ड प्राप्त है। इसलिए हम आशा करते हैं कि सीडीआईआई का शोध वास्तविक औषधि के रूप में परिणत होगा और यह हड्डी से संबंधित समस्याओं से जुड़े रोगियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

कैवियुनिन स्कैफोल्ड जिसमें औषधि शामिल है, पहली ऐसी औषधि है जिसमें एंटीकैटाबोलिक (हड्डियों को टूटने से रोकना) तथा एनाबोलिक (नई हड्डी का निर्माण) गुण विद्यमान है, यह मुख-मार्ग से ली जाने वाली औषधि है जो चरण-2 के क्लीनिकल ट्रायल्स के लिए तैयार है।

सीएसआईआर निस्पर में बौद्धिक संपदा और युवा : बेहतर भविष्य के लिए नवाचार पर राष्ट्रीय कार्यशाला

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर—राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर—निस्पर) द्वारा 26 अप्रैल, 2022 को सीएसआईआर—निस्पर, पूसा परिसर, नई दिल्ली में “बौद्धिक संपदा

और युवा: बेहतर भविष्य के लिए नवाचार” विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि हनीबी नेटवर्क, सृष्टि, ज्ञान, एनआईएफ के संस्थापक पद्मश्री प्रोफेसर अनिल कुमार

गुप्ता थे। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रोफेसर अनिल कुमार गुप्ता वर्चुअल माध्यम से जुड़े थे। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. समीर कुमार स्वरूप, उपमहानिदेशक, एकस्व एवं अभिकल्प, बौद्धिक संपदा भवन, नई दिल्ली थे।



WORLD INTELLECTUAL PROPERTY DAY

CSIR-NIScPR, New Delhi

NATIONAL WORKSHOP
on
IP AND YOUTH
INNOVATING FOR A BETTER FUTURE
World Intellectual Property Day 2022
April 26

26th April 2022
9:00 AM to 1:40 PM

CSIR-National Institute of Science Communication and Policy Research (CSIR-NIScPR)
Dr K.S Krishnan Marg, Pusa, New Delhi- 110012

Join us on:
<https://www.facebook.com/niscprcsir/live>

Presidential Remarks
Dr Shekhar C Mande
Director General, CSIR

Welcome Address
Prof Ranjana Aggarwal
Director, CSIR-NIScPR

Chief Guest
Prof Anil K Gupta
Founder, Honey Bee Network, SRISTI, GIAN & NIF

Guest of Honour
Dr Sameer Kumar Swarup
Deputy Controller of Patents & Designs, Intellectual Property Office

Coordinator
Dr Kanika Malik
Sr Principal Scientist
CSIR-NIScPR

इस कार्यक्रम में सीएसआईआर के अनेक संस्थानों के वैज्ञानिक, शिक्षक, नवाचारक, विद्यार्थी शामिल हुए। इस अवसर पर अनेक लोग आभासी माध्यम से भी जुड़े।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। उद्घाटन सत्र में स्वागत संबोधन करते हुए सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने कार्यशाला के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि किस प्रकार से सीएसआईआर-निस्पर दो संस्थाओं के विलय से 2021 में अस्तित्व में आया। आज यह संस्थान विज्ञान संचार और विज्ञान नीति पर अग्रणी रूप से कार्य कर रहा है। आज पेटेंट इको सिस्टम को पूर्व की तुलना

में सरकार और संस्थानों द्वारा अधिक प्रभावी बनाया गया है। उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव में देश का लक्ष्य अगले 25 वर्षों में हमारे देश को विश्वगुरु बनाने का है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में नवाचारों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उन्होंने स्वास्थ्य के क्षेत्र का उदाहरण देते हुए बताया कि कोविड-19 के दौर में भारतीय वैज्ञानिकों के कार्यों ने देश का नाम रोशन किया है। इसी प्रकार जलवायु परिवर्तन और कार्बन न्यूट्रल सहित अन्य क्षेत्रों में हमें कार्य करना होगा। इन सभी कार्यों में परंपरागत ज्ञान और नये नवाचारों की भूमिका होगी। सभी के सामूहिक प्रयासों से ही सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकेगा।

उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम के विशिष्ट

अतिथि डॉ. समीर कुमार स्वरूप ने अपने संबोधन में कहा कि आज का दिन नवाचारों के स्मरण का है। किसी समस्या या कठिनाई से नवाचारक की भावना पर असर नहीं पड़ता। कोविड-19 के दौरान पूर्व वर्षों की तुलना में अधिक नवाचारों संबंधी आवेदन प्राप्त हुए। कोविड-19 के दौरान कई नए एप्स का विकास हुआ। इस वर्ष विश्व बौद्धिक संपदा दिवस की थीम **"बौद्धिक संपदा और युवा : बेहतर भविष्य के लिए नवाचार"** है। असल में हमारी रचनात्मकता सदैव बनी रहनी चाहिए। युवा अवस्था में हमारे पास कई विचार होते हैं। हमें उनके बारे में आगे जानना चाहिए। संस्थानों को ऐसी गतिविधियां आयोजित करनी चाहिए जिससे नवाचारकों

को प्रोत्साहित किया जा सके।

उद्घाटन सत्र के दौरान समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिल कुमार गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि बौद्धिक संपदा और सामाजिक नवाचारकों और उद्यमियों का अहम संबंध है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से हनी बी नवाचारकों को प्रोत्साहित करता है। प्रोफेसर अनिल कुमार गुप्ता ने विद्यार्थियों को चरखे हित नवाचार संबंधी कई उदाहरणों से नवाचार की महत्ता के बारे में समझाया। उन्होंने बताया कि नवाचार न केवल सामाजिक समस्याओं के लिए किए जाते हैं बल्कि स्वातः सुखाय की भावना से भी किए जाते हैं।

इस अवसर पर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम नवाचार पुरस्कार विजेता बिड़ला विद्या निकेतन विद्यालय, दिल्ली के अग्निज मोईत्रा ने अपना प्रस्तुतिकरण दिया। जिसमें उन्होंने बताया कि किस तरह उनके मन में टेट्रापैक में बदलाव का विचार आया और उनके इस विचार ने उन्हें यह सम्मान दिलाया। उन्होंने यह भी बताया कि उनका नवाचार कैसे सतत विकास, स्मार्टसिटी, खाद्यान्न सुरक्षा से संबंधित है।

“बौद्धिक संपदा और युवा: बेहतर भविष्य के लिए नवाचार” पर केन्द्रित इस राष्ट्रीय कार्यशाला में दो तकनीकी सत्र संपन्न हुए। पहला सत्र नवाचार, बौद्धिक संपदा, उद्यमिता, स्टार्टअप पर था। इस सत्र में दो विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। इस अवसर पर, सीएसआईआर निस्पर के नीति अनुसंधान के डीन/सलाहकार और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. सुजीत भट्टाचार्य ने कहा कि हर नवाचार के पीछे कई सफल कहानियां हैं। जिज्ञासा, प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति और निडरता नवाचार के ही आधार हैं।

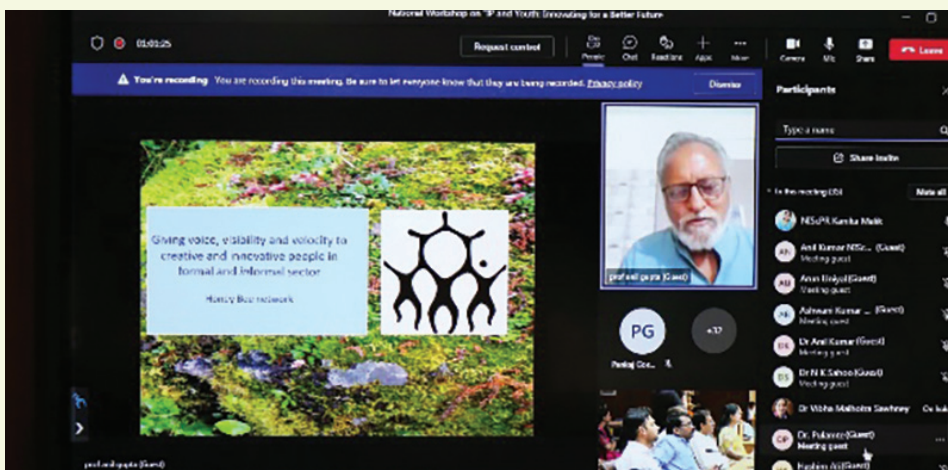
दूसरे व्याख्यान का विषय बौद्धिक संपदा अधिकारों पर जानकारी से संबंधित था। सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ



कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों का सामूहिक चित्र



कार्यशाला को संबोधित करते विशिष्ट अतिथि डॉ. समीर कुमार स्वरूप



कार्यशाला को संबोधित करते मुख्य अतिथि प्रोफेसर अनिल कुमार



नवाचारकों को सम्मानित करते अतिथिगण



कार्यशाला में उपस्थित नवाचारक

धन्यवाद प्रस्ताव देती सीएसआईआर-निस्पर की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यशाला की संयोजिका डॉ. कनिका मलिक

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. कनिका मलिक ने अपने व्याख्यान में बौद्धिक अधिकार की रक्षा के लिए विभिन्न अधिनियमों के बारे में बताया। उन्होंने विभिन्न उदाहरणों द्वारा बौद्धिक संपदा के विभिन्न पहलुओं को समझाया। इस सत्र में भी युवा नवाचारकों और उद्यमियों ने अपने अनुभव भी साझा किए।

दूसरे सत्र में “प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (स्टूडेंट इंटरफेस)” विषय पर सीएसआईआर-निस्पर के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं समन्वयक, वैज्ञानिक एवं नवाचार अनुसंधान अकादमी (एसीएसआईआर), डॉ. विपन कुमार द्वारा व्याख्यान दिया गया। उन्होंने बताया कि पिछला दशक सूचना

प्रौद्योगिकी का दशक था। अगला दशक स्टार्टअप का रहेगा। हम देख रहे हैं कि पूरे भारत में अनेक स्टार्टअप चल रहे हैं जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनायी है। हमें ऐसी प्रौद्योगिकियों की पहचान करनी है जिनमें क्षमता हो और जो बाजार में सफलता प्राप्त कर सकें।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देशभर से आए अनेक नवाचारकों ने अपने नवाचारों पर विस्तार से प्रस्तुतिकरण दिया। इन नवाचारों में एयर प्युरो, फसल से खरपतवार हटाने की मशीन, बिना झुके किसानों द्वारा गोभी निकालने की मशीन, अंगदान के लिए एप्प, सोरल

पावर चार्जर, खनन निगरानी रोबोटस विलेंस, दिव्यांगों के लिए साथी एप, फिलकर ए आई, पेपर टूथब्रश, स्वचालित सिंचाई एवं खरपतवार आकलन प्रणाली सहित अनेक नवाचार शामिल थे। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में विद्यार्थियों ने विशेषज्ञों और आपस में विचार विमर्श भी किया। इस अवसर पर सीएसआईआर-निस्पर द्वारा अपने प्रकाशनों एवं अन्य ज्ञानवर्धक सामग्रियों को प्रदर्शित किया गया। इस राष्ट्रीय कार्यशाला की संयोजक डॉ. कनिका मलिक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुआ।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में पोषण मैत्री अभियान पर कार्यक्रम



सीएसआईआर-आईएचबीटी में दिनांक 25 अप्रैल 2022 को महिला एवं बाल विकास निदेशालय, भारत सरकार के सहयोग से पोषण अभियान के अन्तर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा समन्वित पोषण मैत्री कार्यक्रम की प्रगति एवं भविष्य कार्ययोजना पर समारोह किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. निपुण जिंदल, उपायुक्त कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश ने पोषण मैत्री कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए सीएसआईआर-आईएचबीटी, बाल विकास परियोजना अधिकारियों एवं सभी उपस्थित प्रतिभागियों को बधाई दी। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2016 एवं 2020 के आंकड़े बहुत ही चिंतनीय हैं। बच्चों एवं महिलाएं सामान्य से कम वजन, स्टंटिंग या एनीमिया से कुपोषित हैं। पोषण पर नीति तर्कसंगत होनी चाहिए। संस्थान द्वारा पोषण हेतु विकसित उत्पीदों के परिणाम एवं कार्यक्रम बहुत ही सकारात्मक हैं। इसे देखते हुए इस कार्यक्रम को पूरे जिला कांगड़ा में विस्तार

करने पर विचार किया जाएगा। साथ ही 0 से 2 वर्ष के बच्चों को भी इस पोषण अभियान के अन्तर्गत लाने की आवश्यकता है।

इससे पूर्व डॉ. संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने बताया कि संस्थान ने बच्चों एवं महिलाओं के लिए पोषण हेतु आयरन, प्रोटीन और फाइबर युक्त उत्पादों को विकसित किया है। विटामिन डी से भरपूर सिटाके मशरूम केप्सूल भी तैयार किए हैं। उन्होंने आगे बताया कि सीएसआईआर-आईएचबीटी ने अनाजों और दालों, सूक्ष्म शैवाल और कम उपयोग वाले कृषि-बागवानी उत्पादों का उपयोग करके प्रोटीन एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों के कुपोषण से निपटने के लिए विभिन्न कम लागत वाले उत्पाद विकसित किए हैं। प्रि-क्लीनिकल पशु मॉडल में इसकी जैव-प्रभावकारिता के लिए उत्पादों का मूल्यांकन किया गया है और बड़े पैमाने पर पूरक कार्यक्रमों में एकीकरण के लिए चिकित्सकीय परीक्षण भी किया गया है।

संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने माननीय राज्यपाल का स्वागत करते हुए संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों एवं गतिविधियों

का विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि संस्थान द्वारा किसानों को सुगंधित फसलें विशेषकर जंगली गेंदे को उगाने एवं इसके प्रसंस्करण के लिए अलग-अलग राज्यों में आसवन इकाइयों स्थापित की गई। संस्थान, ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली गेंदे, दमस्क गुलाब, लेमन घास, सुगंधबाला आदि जैसे सुगंधित फसलों की खेती और प्रसंस्करण द्वारा किसानों की आय बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है जिससे किसान परम्परागत फसलों की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त करके आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों, बेरोजगार युवाओं, उद्यमियों में क्षमता निर्माण संस्थान का एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। उन्होंने कहा कि संस्थान ने बड़ी संख्या में लोगों को फूलों की खेती और शहद उत्पादन के क्षेत्रों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हींग और केसर की शुरुआत के अलावा, संस्थान ने दालचीनी और मोती की खेती के क्षेत्र में भी प्रगति की है। उन्होंने आगे कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों, बेरोजगार युवाओं,

उद्यमियों के बीच क्षमता निर्माण संस्थान का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है।

इस अवसर पर डॉ. विद्याशंकर, सीएसआईआर-आईएचबीटी ने पोषण अभियान के अंतर्गत किए गए कार्यों पर संक्षिप्त प्रेजेंटेशन दी। श्री अश्विनी कुमार, जिला कार्यक्रम

अधिकारी एवं श्रीमती रेणु शर्मा, बाल विकास परियोजना अधिकारी, पंचरुखी ने भी अपने विचार रखे।

इस कार्यक्रम में उपमंडल अधिकारी डा. अमित गुलेरिया, बाल विकास परियोजना अधिकारी बैजनाथ, पंचरुखी, भवारना,

सुलह, लंबागांव, पोषण अभियान सुपरवाइजर एवं समन्वयक, आंगनबाड़ी एवं आशा कार्यकर्ता और सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान के स्टाफ ने प्रतिभागिता की।

सीएसआईआर-सीडीआरआई वैज्ञानिक डॉ. रितु त्रिवेदी महिलाओं के लिए राष्ट्रीय तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार-2022 के लिए चयनित

प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड, डीएसटी, भारत सरकार, नवीन स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण में महिला वैज्ञानिकों/उद्यमियों के उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने हेतु दो श्रेणियों में राष्ट्रीय तकनीकी उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान करता है, जिसमें पहला पुरस्कार ट्रांसलेशनल अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय महिला वैज्ञानिक पुरस्कार एवं दूसरा राष्ट्रीय महिला उद्यमी पुरस्कार जो उद्यमशीलता हेतु प्रदान किया जाता है।

सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई), लखनऊ में सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. रितु त्रिवेदी को डीएसटी द्वारा ट्रांसलेशनल रिसर्च में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय महिला वैज्ञानिक पुरस्कार (महिलाओं के लिए नेशनल टेक एक्सिलेन्स अवार्ड-2022) के लिए चुना गया। यह पुरस्कार उन्हें औषधि रीयूनियन जो तेजी से फ्रैक्चर उपचार एवं पोस्टमेनोपॉजल ऑस्टियोपोरोसिस के प्रबंधन के लिए उपयोगी है, के विकास हेतु उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जा रहा है।

डॉ. रितु को हाल ही में प्रकाशित **“75 अंडर 50: साइंटिस्ट्स शेपिंग दुडेज इंडिया”** में भी चुना गया था डॉ. रितु त्रिवेदी को हाल ही में विज्ञान प्रसार द्वारा प्रकाशित **“75 अंडर 50: साइंटिस्ट्स शेपिंग दुडेज इंडिया”** कॉफी-टेबल पुस्तक में चित्रित किया है, जिसे माननीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2022 पर जारी किया गया था। यह पहल विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा की गई थी। 50 वर्ष से कम आयु के 75



वैज्ञानिकों में से केवल 12 महिलाओं को इस पुस्तक में चित्रित किया गया है और डॉ. रितु त्रिवेदी उनमें से एक हैं जिन्होंने सीडीआरआई को गौरवान्वित किया है।

इसके अलावा, उन्हें प्रतिष्ठित रिलायंस इंडस्ट्रीज प्लेटिनम जुबली अवार्ड (2020), जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा टाटा इनोवेशन अवार्ड-2019-20 और नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज, इंडिया (NASI) द्वारा पी. शील अवार्ड-2019 से सम्मानित किया गया है। तेवतिया मेमोरियल ओरेशन अवार्ड (2018), मार्क सेडम एटम चेंयर द्वारा फ्रैक्चर हीलिंग और पोस्ट-मेनोपॉजल ऑस्टियोपोरोसिस दवा



**Standardized Extract of
Dalbergia sissoo
(Sheesham leaves)
for
Fracture healing &
Osteoporosis
management**

**Launched for marketing
on 17 Feb 2016**

<http://www.cdri.res.in>  CSIR.CDRI  CSIR_CDRI

रीयूनियन के लैब से बाजार तक ट्रांसलेशनल अनुसंधान हेतु स्टेम (एसटीईएम) इम्पैक्ट अवार्ड (2019), ऑस्टियोआर्थराइटिस के लिए वर्ष 2019 का प्रौद्योगिकी पुरस्कार, इंदिरा गांधी सम्मान 2017, फ्रैक्चर हीलिंग और पोस्ट-मेनोपॉजल ऑस्टियोपोरोसिस के लिए डालबर्गिया सिसो के लिए प्रौद्योगिकी पुरस्कार (2016) आदि पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (NASI) ने उन्हें विज्ञान में उनके योगदान के लिए अकादमी का फेलो (FNASc) भी चुना है।

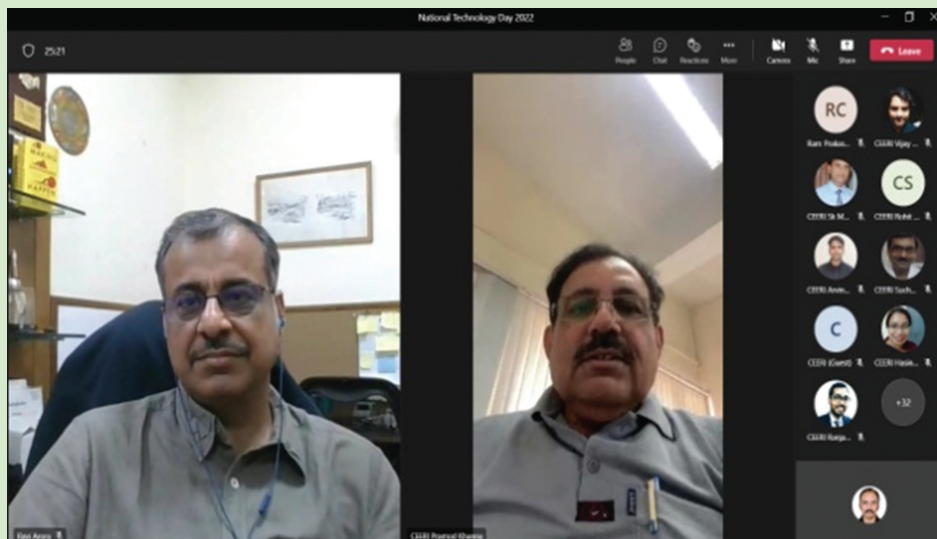
सीएसआईआर-सीरी में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2022 का आयोजन

सीएसआईआर-सीरी में 11 मई, 2022 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस गरिमामय ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर टाटा सन्स के उपाध्यक्ष तथा नवाचार के प्रमुख श्री रवि अरोड़ा ने सस्टेनेबल अप्रोच फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी (अर्थात विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लिए सतत् दृष्टिकोण) विषय पर तकनीकी व्याख्यान दिया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सर्वश्री डॉ पी के खन्ना, डॉ सुचंदन पाल, डॉ अभिजीत कर्माकर सहित अन्य वैज्ञानिक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इसके अलावा तकनीकी सहकर्मियों एवं शोधार्थी छात्र भी आमंत्रित व्याख्यान से लाभान्वित हुए।

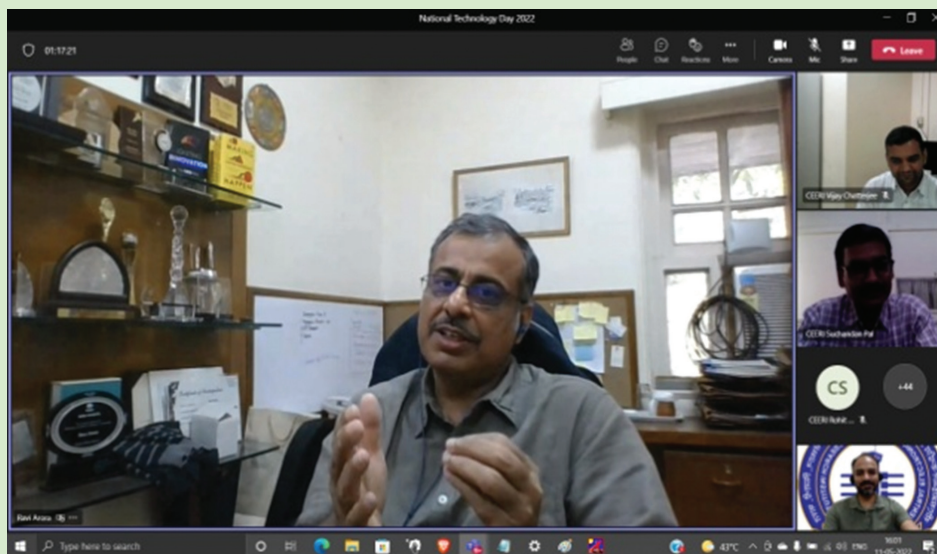
डॉ पी के खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के निदेशक एवं सभी कार्मिकों की ओर से श्री रवि अरोड़ा का स्वागत किया तथा सभी श्रोताओं को उनका औपचारिक परिचय दिया। इससे पूर्व परियोजना प्रबंधन एवं मूल्यांकन समूह के प्रमुख डॉ सुचंदन पाल ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

आभासी (वर्चुअल) रूप में दिए गए अपने व्याख्यान में श्री रवि अरोड़ा ने इस रोचक विषय के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के लाभों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अनुसंधान को उत्पाद के रूप में विकसित कर न केवल बाजार के अनुरूप ढालना होगा अपितु उपयोगकर्ताओं से फीडबैक लेकर उसमें आवश्यक सुधार भी करने होंगे। उन्होंने बताया कि भारतीय उद्योग तो नई टेक्नोलॉजी और नए उत्पादों को स्वीकार करने के लिए हमेशा ही तैयार रहते हैं लेकिन शोध संस्थानों को भी नवाचारों के साथ आगे आना होगा। अंत में उन्होंने सभी को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस की बधाई दी और इस अवसर पर आमंत्रित व्याख्यान हेतु अवसर देने के लिए डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी के प्रति आभार व्यक्त किया।

व्याख्यान के उपरांत प्रश्नोत्तर सत्र में डॉ विजय चटर्जी, वैज्ञानिक ने संस्थान के



आमंत्रित अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ पी के खन्ना, मुख्य वैज्ञानिक



व्याख्यान के उपरांत प्रश्नोत्तर सत्र का दृश्य

वैज्ञानिकों एवं अन्य सहकर्मियों से प्राप्त प्रश्नों को श्री रवि अरोड़ा के समक्ष रखा। श्री अरोड़ा ने प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के अवसर पर वर्चुअल माध्यम से आयोजित किए गए आमंत्रित व्याख्यान का संचालन करते हुए व्यवसाय संवर्धन समूह के प्रधान वैज्ञानिक

श्री प्रमोद कुमार तँवर ने श्री अरोड़ा का औपचारिक स्वागत किया। अंत में डॉ अभिजीत कर्माकर, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कौशल विकास यूनिट ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में संस्थान का निमंत्रण स्वीकार कर व्याख्यान हेतु सहमत होने के लिए श्री रवि अरोड़ा के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीएसआईआर-सीरी में स्वच्छता पखवाड़ा - 2022 का आयोजन

भारत सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय तथा सीएसआईआर मुख्यालय से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुसार सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान में 1 से 15 मई, 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस अवधि के दौरान संस्थान के विभिन्न प्रभागों/प्रयोगशालाओं/अनुभागों एवं कार्यालय परिसर के अन्य स्थानों पर गहन स्वच्छता अभियान चलाया गया। निदेशक, सीएसआईआर-सीरी द्वारा डॉ मनीष मैथ्यु, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक की अध्यक्षता में गठित समिति ने स्वच्छता कर्मियों एवं अन्य सहकर्मियों के सहयोग से इस स्वच्छता अभियान द्वारा पुराने एवं अनावश्यक रिकॉर्ड की छंटाई (Weeding out) के साथ-साथ खराब एवं अनुपयोगी सामान के निपटान संबंधी कार्यवाई की।

शपथ ग्रहण

संस्थान में आयोजित किए गए स्वच्छता पखवाड़ा का शुभारंभ 2 मई, 2022 को स्वच्छता संबंधी शपथ के साथ किया गया। इस अवसर पर डॉ. पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने सभी सहकर्मियों को स्वच्छता संबंधी शपथ दिलाई। संस्थान के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों व अन्य सहकर्मियों के साथ-साथ अस्थायी सहकर्मी भी उपस्थित थे।

अपने संक्षिप्त संबोधन में डॉ पी सी पंचारिया ने सभी सहकर्मियों को न केवल संस्थान में अपने कार्यस्थल अपितु अन्य स्थानों पर भी साफ-सफाई का ध्यान रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता एक आदत है जिसे हम सभी को अंगीकार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें संस्थान में ही नहीं अपितु अपनी कॉलोनी एवं आस-पास के क्षेत्रों को भी साफ-सुथरा रखना चाहिए। डॉ पंचारिया ने स्वच्छता के महत्व एवं उपयोगिता को रेखांकित करते हुए कहा कि स्वस्थ एवं नीरोगी रहने के लिए भी स्वच्छता आवश्यक है। उन्होंने कार्मिकों को इस अवसर का लाभ उठाते हुए संस्थान की स्वच्छता



सेना और अपने सहकर्मियों के सहयोग से अपने-अपने विभागों/प्रभागों/अनुभागों की साफ-सफाई के लिए प्रेरित किया।

इससे पूर्व स्वच्छता पखवाड़ा-2022 के

शुभारंभ के अवसर पर श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक ने सभागार में उपस्थित सहकर्मियों को संबोधित करते हुए बताया कि पखवाड़ा अवधि में संस्थान के विभिन्न



शोध समूहों/क्षेत्रों/प्रभागों/अनुभागों आदि के लिए स्वच्छता अनुक्रम जारी किया गया है। उन्होंने बताया कि श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी को स्वच्छता अभियान का नोडल अधिकारी मनोनीत किया गया है। श्री शरण ने सभी प्रभागाध्यक्षों से इस अनुक्रम के अनुसार अपने-अपने क्षेत्रों/कक्षों में स्वच्छता अभियान में सहयोग करने का अनुरोध किया तथा तत्संबंधी फोटो नोडल अधिकारी श्री बौरा को भेजने का अनुरोध किया।

स्वच्छता अनुक्रम

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान सहकर्मियों ने स्वच्छता पखवाड़ा समिति के मार्गदर्शन में भंडार अनुभाग, ईएमई तथा स्वच्छता कार्मिकों

के सहयोग से संस्थान परिसर में विभिन्न स्थानों पर रखे पुराने एवं अनुपयोगी सामान को स्वच्छता अनुक्रम के अनुसार स्क्रेप यार्ड में रखवाया।

स्वच्छता पखवाड़े दौरान संस्थान के विभिन्न अनुभागों/प्रभागों/शोध सुविधाओं में कार्यरत सहकर्मियों ने अपने अपने कक्षों/प्रयोगशालाओं/कर्मशालाओं में अपने कार्यस्थल की साफ सफाई की। समिति के अध्यक्ष डॉ मनीष मैथ्यु, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक तथा श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक के नेतृत्व में संस्थान में स्वच्छता अभियान के नोडल अधिकारी श्री रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं समिति के सदस्यों डॉ आनंद अभिषेक, वरिष्ठ वैज्ञानिक

तथा श्री प्रेम कुमार, तकनीकी अधिकारी ने स्वच्छता अनुक्रम के अनुसार नियमित रूप से स्वच्छता अभियान की मॉनीटरिंग की। स्वच्छता पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डॉ मनीष मैथ्यु ने संपूर्ण स्वच्छता अभियान में सहयोग के लिए भंडार अनुभाग के सहकर्मी श्री सुनील उदयवाल एवं श्री जोगेन्द्र सिंह, केंद्रीय कर्मशाला के सहयोगी श्री चिराग मिस्त्री, श्री अनिल शर्मा एवं श्री हजारी लाल, श्री एस के मित्तल एवं श्री नरेन्द्र मीणा (ईएमई), श्री अशोक नायक (सिविल), डॉ आर के सिंह एवं टीम (बागबानी), अरविंद कुमार सिंह एवं टीम (पीसीबी) तथा श्री किशन लाल एवं उनके सहयोगियों (वाच एंड वार्ड) की मुक्त कंठ से सराहना की।

सीएसआईआर-आईएमएमटी मे एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम आयोजित

भुवनेश्वर में स्थित सीएसआईआर-आईएमएमटी में औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए विद्युत रासायनिक प्रसंस्करण तकनीकों और विशेषता पर दो दिवसीय एकीकृत कौशल पहल कार्यक्रम, ईपीसी आईए, (इलेक्ट्रोकेमिकल प्रोसेसिंग तकनीक और औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए विशेषता)-2022 आयोजित किया गया। सीएसआईआर-आईएमएमटी के निदेशक प्रो. सुधासत्त्व बासु की अध्यक्षता में आयोजित यह कार्यक्रम संयोजक डॉ. यू. बालाजी, मुख्य वैज्ञानिक एवं एएमटी विभाग के प्रमुख डॉ. बी. भोई और इंटीग्रेटेड स्किल्स इनिशिएटिव प्रोग्राम सीएसआईआर के संयोजक डॉ. एस के प्रधान की उपस्थिति में आईपीसीआईए-2022 कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर सीएसआईआर-आईएमएमटी

के निदेशक प्रो. बासु ने कहा कि एप्लाइड इंस्ट्रियल इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री में कार्यक्रम प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रमों के संदर्भ में अधिक मूल्यवान हैं क्योंकि इस तरह के पाठ्यक्रम किसी भी शैक्षणिक पाठ्यक्रम में उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा कि प्रतिभागियों के लिए व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्राप्त करने का यह एक शानदार अवसर है। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न विद्युत रासायनिक प्रक्रियाओं में अकादमिक और उद्योग की प्रगति का अवलोकन प्रदान करना है। ओडिशा के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के लगभग 15 प्रतिभागियों के साथ-साथ अंडरग्रेजुएट स्कूल के युवा कार्यकर्ता इसमें शामिल हुए थे। उन्होंने आईएमएमटी के प्रख्यात वैज्ञानिकों के भाषणों, लाइव प्रदर्शन, सुरक्षा दिशानिर्देशों और

आत्म-परीक्षणों के बारे में जानने के लिए इलेक्ट्रोकेमिस्ट्री तकनीकों और अनुप्रयोगों पर बात की। कार्यक्रम दौरान उन्होंने प्रतिभागियों को औद्योगिक इलेक्ट्रोकेमिकल के संचालन और यह व्यावसायिक रूप से व्यवसाय कैसे कर रहा है, यह समझने के लिए मचेस्वर में एक औद्योगिक स्थल का भी दौरा किया जो इस क्षेत्र में अपने भविष्य की आशा कर रहे हैं, यह कार्यक्रम उन लोगों के लिए जरूरी है और उन्हें पेशेवर कौशल प्रदान करने के लिए सहयोगी है। इस कार्यक्रम के दूसरे दिन डॉ. बिकाश कुमार जेना, डॉ. ममता महापात्र, डॉ. चिन्मय कुमार षडंगी और डॉ. उमापाथि बालाजी ने विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की।

सीएसआईआर-आईएचबीटी में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस समारोह का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने 11 मई 2022 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया। विज्ञान

और प्रौद्योगिकी के साथ समाज और उद्योग के एकीकरण के लिए प्रौद्योगिक रचनात्मकता और वैज्ञानिक सशक्तिकरण की खोज के प्रतीक

के रूप में राष्ट्र प्रत्येक वर्ष 11 मई को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाता है। यह दिवस 1998 में पोखरण में सफलतापूर्वक किए गये परमाणु

परीक्षण तथा विश्व का छठा परमाणु देश बनने पर मनाया जाता है।

संस्थान के निदेशक डा. संजय कुमार ने छात्रों, अध्यापकों और अन्य उपस्थित जन का स्वागत करते हुए प्रौद्योगिकी दिवस की शुभकामनाएं दी। अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि कैसे डिजीटल प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन में परिवर्तन लाया है। इससे ज्ञान के प्रसार को गति मिली है। संस्थान अपने मिशन मोड परियोजनाओं के माध्यम से समुदायों के समाजिक-आर्थिक विकास में अपना योगदान कर रहा है। अरोमा मिशन के अन्तर्गत संस्थान किसानों को संगंध फसलों को उगाने एवं इसके प्रसंस्करण द्वारा उनकी आय बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है जिससे किसान परम्परागत फसलों की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त करके आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। अपने संबोधन में उन्होंने वैज्ञानिक अभिरुचि को बढ़ाने के लिए छात्रों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने देश की महत्वपूर्ण प्रौद्योगिक उपलब्धियों तथा विभिन्न वैज्ञानिक उपलब्धियों पर चर्चा की जिसके कारण आज देश आत्मनिर्भर बना है।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. पुलोक कुमार मुखर्जी, निदेशक, जैवसंसाधन एवं स्थायी विकास संस्थान (आईबीएसडी), इंफाल, मणिपुर ने 'एथनोफार्माकोलोजी: परम्परा से परिवर्तन के लिए एकीकृत शास्त्र और विज्ञान' विषय पर प्रौद्योगिकी दिवस संभाषण दिया। अपने संबोधन में डा. मुखर्जी ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में पादप आधारित दवा के विकास में योगदान पर प्रकाश डाला। लोकशास्त्र परम्परा के अनुसार परम्परागत ज्ञान को सहेजने और इसका



आधुनिक दवा क्षेत्र में उपयोग और प्रसार की आवश्यकता है। संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र औषधीय पादप संपदा का स्रोत है। आवश्यकता इसके प्रलेखन की है ताकि आने वाले समय में गुणवत्ता नियंत्रण और मूल्यांकन करके संभावित दवाओं का निर्माण करके इस संपदा का उपयोग करके क्षेत्र की जैव आर्थिकी का उन्नयन किया जा सके। यह आत्मनिर्भर भारत की ओर एक सार्थक कदम होगा।

समारोह में "जिज्ञासा" कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के काँगड़ा जिले के नवोदय विद्यालय, पपरोला, राजकीय विद्यालय, सलियाना, डीएवी पालपमुर, डीएवी, आलमपुर, न्यूगल पब्लिक स्कूल, बृंदावन, परमार्थ स्कूल, बैजनाथ, ग्रीन फील्ड स्कूल, नगरोटा के लगभग 100 छात्रों व शिक्षकों ने भाग लिया तथा प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। इन विद्यार्थियों को संस्थान में विज्ञान के बारे में रोचक

जानकारी देने के साथ यह बताया कि दैनिक जीवन में इसका क्या महत्त्व है।

इस अवसर पर, सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा मैसर्स बिटबेकर रामनडुकरा, कोझीकोड, केरल के साथ यात्रा/पॉकेट परफ्यूम एवं वायु फ्रेशनर और मैसर्स अमलगम बायोटेक, अमलगम इंजीनियरिंग पुणे (एमएच) के साथ "कम्पोस्ट बूस्टर- रात की मिट्टी/रसोई के कचरे के स्थिरीकरण के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। "आईबीएसडी और सीएसआईआर-आईएचबीटी के बीच अनुसंधान एवं विकास सहयोग के उद्देश्य से एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए। क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों, सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिकों, शोध छात्रों, कर्मियों एवं मीडिया प्रतिनिधियों ने भी समारोह की शोभा बढ़ाई।